International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 5, July-August 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

व्यापार हड़प्पा सभ्यता की समृद्धि का प्रमुख कारक था

चंद्रपाल जांदू

सहायक आचार्य, इतिहास, डॉ भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

हड़प्पा संस्कृति में कला-कौशल का पर्याप्त विकास हुआ था. संभवतःईंटों का उद्योग भी राज-नियंत्रित था. सिन्धु सभ्यता के किसी भी स्थल के उत्खनन में ईंट पकाने के भट्ठे नगर के बाहर लगाए गये थे. यह ध्यान देने योग्य बात है कि मोहनजोदड़ो में अंतिम समय को छोड़कर नगर के भीतर मृदभांड बनाने के भट्ठे नहीं मिलते. बर्तन निर्मित करने वाले कुम्हारों का एक अलग वर्ग रहा होगा. अंतिम समय में तो इनका नगर में ही एक अलग मोहल्ला रहा होगा, ऐसा विद्वान् मानते हैं. यहाँ के कुम्हारों ने कुछ विशेष आकार-प्रकार के बर्तनों का ही निर्माण किया, जो अन्य सभ्यता के बर्तनों से अलग पहचान रखते हैं. पत्थर, धातु और मिट्टी की मूर्तियों का निर्माण भी महत्त्वपूर्ण उद्योग रहे होंगे. मनके बनाने वालों की दुकानों और कारखानों के विषय में चन्हुदड़ो और लोथल के उत्खननों से जानकारी प्राप्त होती है. मुद्राओं को निर्मित करने वालों का एक भिन्न वर्ग रहा होगा.कुछ लोग हाथीदांत से विभिन्न चीजों के निर्माण का काम किया करते थे. गुजरात क्षेत्र में उस काल में काफी संख्या में हाथी रहे होंगे और इसलिए इस क्षेत्र में हाथी दांत सुलभ रहा होगा.हाथीदांत की वस्तुओं के निर्माण और व्यापार में लोथल का महत्त्वपूर्ण हाथ रहा होगा. सिन्धु सभ्यता घाटी से बहुमूल्य पत्थरों के मनके और हाथीदांत की वस्तुएँ पश्चिमी एशिया में निर्यात की जाती थीं. व्यापारियों का सम्पन्न वर्ग रहा होगा. पुरोहितों, वैद्यों, ज्योतिषियों के भी वर्ग रहे होंगे और संभवतः उनका समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा होगा. सिन्धु घाटी सभ्यता में मृदभांड-निर्माण और मुद्रा-निर्माण के समान ही मनकों का निर्माण भी एक विकसित उद्योग था. मनकों के निर्माण में सेलकड़ी, गोमेद, कार्नीलियन, जैस्पर आदि पत्थरों, सोना, चाँदी और ताम्बे जैसे धातुओं का प्रयोग हुआ. कांचली मिट्टी, मिट्टी, शंख, हाथीदांत आदि के भी मनके बने.

How to cite this paper: Chandrapal Jadu "Trade Was a Major Factor in the Prosperity of the Harappan Civilization" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-5, August 2022, pp.675-681, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd50532.pdf

IJTSRD50532

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

आकार-प्रकार की दृष्टि से मनकों के प्रकार

1. बेलनाकार
2. दंतचक्र
3. छोटे ढोलाकार
4. लम्बे ढोलाकार
5. अंडाकार या अर्धवृत्त काट वाले आयताकार
6. खाड़ेदार तिर्यक (fiuted tapered)
7. लम्बे ढोलाकार (long barrel cylinder)
8. बिम्ब (disc)
9. गोल
10. रेखांकित
11. दांत की शक्ल
12. सीढ़ीनुमा

मनकों के बारे में महत्त्वपूर्ण तथ्य

- चन्हुदड़ो और लोथल में मनका बनाने वालों के कार्यस्थल उद्घाटित हुए हैं.
- हड़प्पा से एक हृदयाकार मनका मिला है.
- इन मनकों पर तागे डालने हेतु दोनों ओर से छेद किया जाता था.
- चन्हुदड़ो में इस तरह के पत्थर की बेधनियाँ मिली हैं.
- सेलखड़ी के मनके जितने सिंघु घाटी सभ्यता में मिलते हैं उतने विश्व की किसी भी संस्कृति में विद्यमान नहीं हैं.
- कार्नीलियन के रेखांकित मनके तीन प्रकार के हैं – लाल पृष्ठभूमि पर सफ़ेद रंग के डिजाईन वाले, सफ़ेद पृष्ठभूमि पर काले रंग के डिजाईन वाले और लाल पृष्ठभूमि पर काले डिजाईन वाले. प्रथम प्रकार के मनकों पर डिजाईन तेज़ाब से अंकित किया जाता था और पुनः मनके को गरम किया जाता था. फलस्वरूप स्थाई रूप से सफ़ेद रेखाएँ उभर जाती थीं.
- रेखांकित मनके, लम्बे डोलाकार कार्नीलियन के मनके, सेलखड़ी के पकाए गये छोटे मनके, सीढ़ीदार मनके और मनकों पर तिपतिया डिजाईन सिन्धु घाटी सभ्यता और मेसोपोटामिया की संस्कृतियों के मध्य सम्पर्क के द्योतक लगते हैं. परन्तु यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि –

1. सेलखड़ी के मनके सिन्धु सभ्यता में तो अधिक संख्या में मिलते हैं पर मेसोपोतामिया में बहुत ही कम संख्या में ये प्राप्त होते हैं.[1]

2. सेलखड़ी के मनकों पर सिन्धु सभ्यता में चित्रण मिलता है पर मेसोपोटामिया के मनकों पर नहीं.

➢ मनकों के कुछ आकार-प्रकार ऐसे हैं जो सिन्धु सभ्यता में मिलते हैं पर मेसोपोटामिया में नहीं. कुछ मेसोपोतामिया में प्राप्त मनकों के प्रकार सिन्धु सभ्यता घाटी में नहीं मिलते हैं.

उद्योग	केंद्र
बर्तन उद्योग	हड़प्पा और मोहनजोदड़ो
धातु उद्योग	हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल
मनका	चान्हूदड़ो और लोथल
चूड़ी उद्योग	कालीबंगा और चान्हूदड़ो
कांसा उद्योग	मोहनजोदड़ो
ईंट निर्माण उद्योग	सभी जगह
हाथीदांत उद्योग	लोथल
प्रसाधन सामग्री	मोहनजोदड़ो और चान्हूदड़ो
कछुए के खाल से सम्बंधित उद्योग	लोथल
सीप उद्योग	बालाकोट
मूर्ति निर्माण	हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल

विचार-विमर्श

सिन्धु घाटी सभ्यता के हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल आदि नगरों की समृद्धि का प्रमुख स्रोत व्यापार और वाणिज्य था. ये सारे व्यापार भारत के विभिन्न क्षेत्रों तथा विदेशों से जल-स्थल दोनों मार्ग से हुआ करते थे. वास्तव में व्यापार के बिना न तो सुमेर की सभ्यता का विकास होता और न ही सिन्धु घाटी सभ्यता का क्योंकि दोनों ही क्षेत्रों में कच्चे माल और प्राकृतिक संपदा का अभाव है.

यदि व्यापारिक संगठन की बात की जाए तो निश्चय ही इतनी दूर के देशों से बड़े पैमाने पर इतर क्षेत्रों से व्यापार हेतु अच्छा व्यापारिक संगठन रहा होगा. नगरों में कच्चा माल आस-पड़ोस तथा सुदूर स्थानों से उपलब्ध किया जाता था. जिन-जिन स्थानों के कच्चे माल का मोहनजोदड़ो में आयात किया जाता था, इनके सम्बन्ध में विद्वानों ने अनुमान लगाया है जिसका हम संक्षेप में नीचे उल्लेख कर रहे हैं –

डामर (बिटूमिन)

मार्शल के अनुसार सिन्धु के दाहिनी तीर पर स्थित फरान्त नदी के तट से बिटूमिन लाया जाता रहा होगा.

अलाबास्टर

यह संभवतः बलूचिस्तान से प्राप्त किया जाता था.

सेलखड़ी

ज्यादातर सेलखड़ी बलूचिस्तान और राजस्थान से लायी जाती थी. इतिहासकार राव का कहना है कि धूसर और कुछ पांडु रंग की सेलखड़ी संभवतः दक्कन से आती थी. उनका यह भी मानना है कि गुजरात के देवनीमोरी या किसी अन्य स्थल से लाई गयी होगी.

चाँदी

यह मुख्यतः अफगानिस्तान अथवा ईरान आयातित होती थी. आभूषणों के अतिरिक्त इस धातु से निर्मित अल्प संख्या में बर्तन भी मिले हैं. राव का कहना है कि यदि कोलार खदान से सोना निकालने वाले चाँदी व सोना अलग कर सकते थे तो लोथल में, जहाँ पर चाँदी का प्रयोग बहुत कम मिलता है (केवल एक चूड़ी और एक अन्य वस्तु जिसकी पहचान कठिन है, ही मिली है), चाँदी कोलार की खान से आई होगी. दूसरा संभावित स्रोत वे राजस्थान में उदयपुर के समीप ज्वार-खान को मानते हैं.

सोना

जैसा इडविन पास्को ने सुझाया है, सोना अधिकतर दक्षिण भारत से आयात किया गया होगा. इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से प्राप्त सोने में चाँदी का मिश्रण है जो दक्षिण के कोलार की स्वर्ण-खानों की विशेषतः है. मास्को-पिक्लिहिल, तेक्कल कोटा जैसे कोलार स्वर्णक्षेत्र के निकटवर्ती स्थलों में नवपाषाण युगीन संस्कृति के संदर्भ में सिन्धु सभ्यता प्रकार के सेलखड़ी के चक्राकार मनके मिले हैं और तेक्कल कोटा से ताम्बे की कुल्हाड़ी भी. इससे दक्षिणी क्षेत्र से सिन्धु घाटी सभ्यता का सम्पर्क होना लगता है. यों ईरान और अफगानिस्तान से भी कुछ सोना आ सकता था और कुछ नदियों की बालू छान कर भी प्राप्त किया जाता रहा होगा. विभिन्न प्रकार के आभूषणों, मुख्यतः मनके और फीतों, के निर्माण के लिए प्रयोग किया जाता रहा होगा.[2]

तांबा

सिन्धु घाटी और राजस्थान के हड़प्पा स्थलों में तांबा मुख्यतः राजस्थान के खेत्री क्षेत्र से आता था. ताम्बे का प्रयोग अस्त्र-शस्त्र, दैनिक जीवन में उपयोग के उपकरण, बर्तन और आभूषण बनाने में होता था. खेत्री से प्राप्त ताम्बे में आर्सेनिक और निकल पर्याप्त मात्रा में मिलता है और हड़प्पा-मोहनजोदड़ो के ताम्र उपकरणों के विश्लेषण से उनमें भी यही बात पाई गई. राव के अनुसार ताम्बे का आयात शायद दक्षिणी अरब के ओमान से लोथल में किया जाता था.

टीन

यह धातु शायद अफगानिस्तान या ईरान से आयातित होती थी. कुछ इतिहासकारों का कहना है कि हजारीबाग़ (झारखण्ड) से भी कुछ टीन आता होगा.

सीसा

यह ईरान, अफगानिस्तान और मुख्यतः राजस्थान (अजमेर) से लाया गया होगा. इसका प्रयोग बहुत कम था.

फोरोजा (टक्बाईज)

यह खोरासान (उत्तर-पूर्वी फारस) या अफगानिस्तान से प्राप्त होता था. मोहनजोदड़ो में इससे बनी खोदी-सी ही मुद्राएँ मिली है.

जेडाइट

यह पामीर या और पूर्वी तुर्किस्तान से आया होगा. वैसे यह तिब्बत और उत्तरी बर्मा में भी उपलब्ध है. इसके भी मनके मिले हैं जो बहुत कम संख्या में हैं.

लाजवर्द
बदख्शां (अफगानिस्तान के उत्तरी क्षेत्र) से यह लाया गया होगा. इसका प्रयोग बहुत कम मात्रा में हुआ है. लाजवर्द के बने मोहनजोदड़ो से दो मनके और एक मोती, हड़प्पा से तीन मनके और लोथल से दो मनके मिले हैं. लाजवर्द के मनके मेसोपोटामिलया में पर्याप्त संख्या में मिले हैं, अतः यह अनुमान लगाना स्वाभाविक है कि सिन्धु सभ्यता की लाजवर्द की वस्तुएँ मेसोपोटामिया से आई होंगी. किन्तु यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि चन्हुदड़ो के अधूरे बने मनके इस बात के द्योतक हैं कि उनका निर्माण वहीं पर हुआ था. वहाँ पर यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि नाल में सिन्धु सभ्यता के विकसित चरण से पूर्व की तिथि वाले स्तर में लाखवद के मनकों से बनी कई लड़ियों के हार मिले हैं.

लाल रंग
यों तो यह कच्छ और मध्य भारत में भी मिलता है, किन्तु फारस की खाड़ी के द्वीप हीरमुज में बहुत चमकदार लाल रंग मिलता है, अतः इसके वहीं से लाये जाने की अधिक संभावना है.

हेमेटाइट
यह राजपुताना से आता था.

शंख, घोंघे
ये भारत के पश्चिमी समुद्रतट से और फारस की खाड़ी से प्राप्त किये जाते थे.

गोमद कार्नीलियन
ये राजपुताना, पंजाब, मध्य भारत और काठियावाड़ में मिलते हैं. काठियावाड़ में सिन्धु सभ्यता के इस क्षेत्र से उनके प्राप्त किये जाने की संभावना अधिक है.[3]

स्लेटी पत्थर
यह राजस्थान से लाया गया होगा.

सूर्यकान्त (जैस्पर)
अधिकांश विद्वानों के अनुसार इसका राजस्थान से आयात होता था लेकिन राव के अनुसार रंगपुर के समीप भादर नदी के तल से जैस्पर प्राप्त होता था.

संगमरमर
1950 में व्हीलर द्वारा की गई खुदाइयों में मोहनजोदड़ो में संगमरमर के कुछ टुकड़े मिले जो क इसी भवन में प्रयुक्त रहे होंगे. यह राजस्थान से लाया गया होगा.

चर्ट
यह सक्कर-रोहरी से प्राप्त होता था.

ब्लड स्टोन
राजस्थान से लाया गया होगा.

फुक्साट
मोहनजोदड़ो से एक साढ़े चार ईंच ऊँचा जेड के रंग का प्याला मिला है जिसकी पहचान फुक्साइट से की गई है. इस पत्थर को मैसूर से प्राप्त किया गया होगा.

अमेजोनाइट
पहले यह धारणा थी कि संभवतः सिन्धु सभ्यता के लोगों द्वारा यह पत्थर दक्षिणी नीलगिरी पहाड़ी या कश्मीर से प्राप्त किया गया होगा, परन्तु आज यह मानी है कि वह अहमदाबाद के उत्तर में हीरापुर पठार से लाया गया होगा जो कि सौराष्ट्र के सिन्धु सभ्यता के स्थलों के अत्यंत समीप है.

देवदार और शिलाजीत
ये दोनों हिमालय से लाये जाते थे.

मुहर
भारतीय और भारेत्तर प्रदेशों में व्यापार के कारण एक सुसंगठित व्यापारी वर्ग का उदय हो गया था. ऐसा लगता है कि वे व्यापारी अपने माल को बाँध कर उपसर पर अपनी मुद्रा अंकित कर देते थे जिससे यह पहचान हो सके कि माल किसने भेजा है. माल में मुद्रा-छाप का लगा होना इस बात का भी द्योतक है कि वह माल पहले किसी ने नहीं खोला है. यह भी हो सकता है कि राजकीय अधिकारी अथवा व्यापारिक संगठनों के कर्मचारी माल का निरीक्षण कर उस पर मिदरा लगाते थे. ऐसी स्थिति में माल पर मुद्रा लगा होना इस बात का भी द्योतक रहा होगा कि माल निर्धारित कोटि का है.

लोथल के अन्नागारों या भण्डार गृह में लगभग सत्तर छायें मिलीं जिनके पीछे चटाई जैसे कपड़े के और रस्सी के निशान मिले हैं. स्पष्ट है कि वस्तुओं को कपड़े में लपेट कर रस्सी से बाँधा गया होगा और रस्सी की गाँठ पर मोहर लगाई गई होगी.[4]

इसी जगह कीच मिट्टी के लोंदे पर मुद्रा-छापें हैं जिससे प्रतीत होता है कि कई व्यापरियों का साझा व्यापार भी चलता था और किसी साझे लेन-देन के सिलसिले में उन सभी ने अपनी-अपनी मुहर लगाई थी.

परिणाम

हड़प्पावासियों का भोजन
हड़प्पावासियों के भोजन की आपूर्ति शहर के आसपास के क्षेत्रों में खेती वाले व्यापक क्षेत्रों से की जाती थी। चावल शायद सिंधु घाटी में उगाया जाता था। लोगों के मुख्य भोजन में गेहूं, जौ, चावल, दूध और कुछ सब्जियां जैसे मटर, तिल और खजूर जैसे फल शामिल थे। बीफ, मटन, पोर्क, पोल्ट्री, मछली आदि भी सिंधु लोग खाते थे। कृषि सिंधु लोगों का मुख्य व्यवसाय प्रतीत होता है। हड़प्पा में एक अन्न भंडार की खोज इस बात का समर्थन करती है।

हड़प्पावासियों के वस्त्र
बड़ी संख्या में तकिये की खोज से यह सिद्ध होता है कि सूती कपड़े सामाजिक वस्त्रों की बुनाई के लिए उपयोग किए जाते हैं। ऊन का भी प्रयोग किया जाता था। हो सकता है कि कपड़े सिल दिए गए हों। स्त्री और पुरुष दोनों ने कपड़े के दो टुकड़ों का इस्तेमाल किया। पुरुषों ने कुछ निचले वस्त्र जैसे धोती और ऊपरी वस्त्र शॉल की तरह पहने थे। ऊपरी वस्त्र ने बाएँ कंधे को लपेटा। महिलाओं की पोशाक पुरुषों की तरह ही थी। पुरुषों ने लंबे बाल पहने, बीच में जुदा हुए, और पीछे की तरफ साफ-सुथरा रखा। सिंधु घाटी की महिलाएं आमतौर पर लंबे बालों को चोटी में बांधती हैं, जिसके अंत में पंखे के आकार का धनुष होता है। सिंधु घाटी की महिलाओं को अपनी आधुनिक बहनों की तरह संस्कृति का शौक था। हड़प्पा में पाए गए "वैनिटी केस" और टॉयलेट जार में हाथीदांत पाउडर, चेहरे की पेंटिंग और कई अन्य प्रकार के सौंदर्य प्रसाधन शामिल थे।

सजावट

अधिकांश घरेलू सामान मिट्टी के बर्तनों या तांबे और कांस्य जैसी धातुओं से बने होते थे। मोहनजो-दारो में मिट्टी के बर्तनों की कला ने अद्भुत उत्कृष्टता प्राप्त की।

बर्तन और उपकरण

जार, बर्तन, व्यंजन आदि सहित अधिकांश रसोई के बर्तन मिट्टी और पत्थर से बने होते थे। तलवार जैसे रक्षात्मक हथियारों का अभाव है। कमरों को सजाने और आराम से बैठने के लिए कुर्सियों और औजारों का इस्तेमाल किया जाता था।[5]

हड़प्पावासियों के मनोरंजन के साधन

जंगली जानवरों का शिकार, सांडों की लड़ाई, मछली पकड़ना और मिट्टी की मॉडलिंग लोगों के सामान्य सामाजिक मनोरंजन थे। विद्वानों द्वारा यह सुझाव दिया गया है कि उनके बीच मजबूत पारिवारिक संगठन थे। कारीगरों ने अपने बच्चों को क्राफ्टिंग का हुनर सिखाया। खिलौनों का इस्तेमाल परिवार के बच्चे करते थे।

हड़प्पावासियों की जागरूकता

अक्षरों से उकेरी गई मुहरों की बड़ी संख्या इस विचार को प्रस्तुत करती है कि सिंधु लोगों के बीच साक्षरता का उच्च प्रतिशत था। ड्रेनेज सिस्टम इसकी सफाई और सार्वजनिक स्वच्छता की भी बात करता है। मुहरें, टेराकोटा की मूर्तियाँ, और नाचती हुई लड़कियों की छवियां सिंधु पुरुषों के कलात्मक स्वाद को साबित करती हैं।

हड़प्पावासियों की आर्थिक स्थिति

खेती

हड़प्पावासियों से पहले की सभ्यताओं की तरह, ये प्राचीन लोग खेती करते थे। हड़प्पा के लोगों ने गाद वाली बाढ़ के आधार पर कृषि सिंचाई और उर्वरता प्रणाली का निर्माण किया। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती थीं। सिंधु घाटी के लोग गेहूं, जौ, खरबूजे, तेल, खजूर, मटर, कपास और संभवतः चावल उगाते थे। किसानों द्वारा उगाई जाने वाली प्रत्येक फसल का एक बड़ा हिस्सा सार्वजनिक अन्न भंडार में भुगतान किया जाना था।

पशुपालन

हड़प्पा के लोग भी कई अलग-अलग जानवरों को पालतू बनाते थे। इन जानवरों में कुत्ते, बिल्ली, कूबड़ वाले मवेशी, शॉर्ट-सींग, भैंस, सूअर, ऊंट, घोड़े और संभवतः हाथी शामिल थे।

व्यापार

व्यापार के माध्यम से सभ्यता ने सुदूर भूमि के संपर्क में आकर अपनी संस्कृति का विस्तार किया। लंबी तटरेखा और नदियों ने पानी द्वारा लगातार यातायात प्रदान किया। पुरातत्वविदों को पूरे महाद्वीप में हड़प्पा की मुहरें मिली हैं! नीचे दिया गया फोटो हड़प्पा की मुहरों/मुद्राओं को दर्शाता है। सिंधु के लोग तांबे और टिन का इस्तेमाल करते थे। सिंधु लोगों का पश्चिमी एशिया के साथ व्यापारिक संबंध था। इन क्षेत्रों में सिंधु मुहरों की खोज से यह स्पष्ट होता है। सिंधु शहर भी सुमेरिया के साथ व्यापार करते थे। यह सुमेरिया में कई सिंधु मुहरों की खोज से भी साबित होता है। हाथीदांत के कामों के अलावा, सिंधु शहरों से कंघे और मोती पश्चिम एशिया को निर्यात किए जाते थे। यह माना जाता है कि सिंधु नगरों से बड़ी संख्या में व्यापारी सुमेरिया में रहते थे।

कला और सजावट

सिंधु लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली घरेलू वस्तुएं और वे आरामदायक घर जिनमें वे रहते थे, सिंधु लोगों की समृद्धि को दर्शाते हैं। यह एक समृद्ध सभ्यता थी। धनी लोग गहनों से जड़ित सोने के यंत्रों का प्रयोग करते थे। कला और शिल्प में उत्कृष्टता उत्तम आभूषणों, पत्थर और तांबे के औजारों और कुम्हारों द्वारा सिद्ध होती है। बुनाई लोगों का प्रमुख व्यवसाय था। व्यापार और उद्योग के अलावा, कृषि सिंधु लोगों का मुख्य व्यवसाय था। सिन्धु लोग विभिन्न प्रकार के बाटों और मापों का प्रयोग करते थे। वजन के उचित मानक को बनाए रखने के लिए सख्त नियंत्रण का प्रयोग किया गया था। दशमलव प्रणाली भी उन्हें ज्ञात थी।

हड़प्पा के लोगों का धार्मिक जीवन

सिंधु लोगों के धर्म के कुछ दिलचस्प पहलू थे। सिंधु घाटी के अवशेषों में किसी मंदिर का अभाव है। कुछ विद्वान यह मानना पसंद करते हैं कि हड़प्पा और मोहनजो-दारो में मिले बड़े भवन वास्तव में मंदिर थे। डॉ. बाशम ने इस मत को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि इन भवनों के भीतर कोई मूर्ति नहीं मिली है।[6]

पूजा

कई टेरा-कोट्टा मूर्तियों की खोज से देवी माँ (शक्ति) की पूजा का महत्व सिद्ध होता है। शिव की पूजा का सुझाव तीन मुखों वाले एक देवता की आकृति की खोज से मिलता है, जिसमें एक सींग वाली टोपी है, जो योग मुद्रा में क्रॉस-पैर वाले बैठे हैं, जो भैंस, गैंडे, हिरण, बाघ, आदि जैसे जानवरों से घिरे हुए हैं। दो और

आकृतियाँ शिव का प्रतिनिधित्व भी किया गया है। इन आकृतियों में शिव योग मुद्रा में विराजमान हैं और उनके सिर से पौधे या फूल निकलते हैं। शिव और देवी माँ की पूजा व्यापक रूप से प्रचलित थी। पशु पूजा को मुहरों और टेराकोटा मूर्तियों द्वारा दिखाया गया है। सिन्धु लोगों में वृक्षों की पूजा, अग्नि, जल और संभवतः सूर्य की उपासना प्रमुख रही प्रतीत होती है। स्वस्तिक चिन्ह और चक्र चिन्ह वाली कुछ मुहरों की खोज भी सूर्य पूजा का संकेत देती है। स्वस्तिक सूर्य का प्रतीक है।

बलि

लोथल के एक बलि के गड्ढे की खोज इस दृष्टिकोण का समर्थन करती है कि सिंधु लोग पशु बलि करते थे। हम इस बिंदु के बारे में निश्चित नहीं हैं और हमें और सबूत चाहिए।

अंतिम संस्कार सीमा शुल्क

सिंधु लोगों के अंतिम संस्कार के तीन रीति-रिवाज थे। शव का पहला पूर्ण अंत्येष्टि। इसके बाद, उन्होंने या तो मृत शरीर की हड्डियों को जंगली जानवरों के खाने के बाद दफन कर दिया, या शव को जलाने के बाद राख और हड्डियों को दफन कर दिया।[7]

हड़प्पा के लोगों का राजनीतिक जीवन

हालांकि सिंधु नदी घाटी सभ्यता की सरकार कुछ हद तक एक रहस्य है, हम जानते हैं कि उनके पास कुछ हद तक केंद्र सरकार थी, क्योंकि शहर का लेआउट सभी शहरों के समान ही था। सामाजिक स्तर पर आने पर सिंधु के पुजारी सर्वोच्च लोग थे, और क्योंकि वे वही थे जो देवताओं को प्रसाद चढ़ाते थे। इस वजह से लोग उनकी तरफ देखने लगे।

स्कूली शिक्षा और सरकार

हड़प्पावासी स्कूली शिक्षा पर ज्यादा नहीं थे। हर गाँव में एक स्कूल मास्टर होता था जो लड़कों को पाँच साल की उम्र से लेकर आठ साल की उम्र तक पढ़ाता था। उनके लिए अनुशासन स्कूली शिक्षा का सार था। फिर भी, एक गुरु (जो एक प्रकार का शिक्षक था) अपने छात्र के साथ तब तक रहेगा जब तक वह छात्र बीस वर्ष का नहीं हो जाता। तब तक छात्र को गुरु के लिए काम और सेवा करने की आवश्यकता थी। सभी विषय धार्मिक प्रकृति के थे। स्कूली शिक्षा का संबंध सरकार से है, क्योंकि स्कूल में उन्होंने धर्म के बारे में बहुत कुछ सीखा, और धर्म सरकार का एक बड़ा हिस्सा था।

हड़प्पा सिंधु घाटी में पाया गया पहला पुरातात्विक स्थल था। कभी-कभी सिंधु घाटी के अन्य स्थल हड़प्पा सभ्यता के साथ भ्रमित होते हैं। जहां तक सिंधु लिपि का सवाल है, इसे अभी तक समझा नहीं जा सका है। मिट्टी के बर्तनों, मुहरों और ताबीजों पर लिपि के कई अवशेष हैं, लेकिन "रोसेटा स्टोन" के बिना पुरातत्वविद इसे समझने में असमर्थ रहे हैं। हड़प्पावासियों के जीवन के बारे में जानकारी देने के लिए उन्हें जीवित सांस्कृतिक सामग्रियों पर निर्भर रहना पड़ा। हड़प्पा के लोग बहुत बुद्धिमान थे। उन्होंने एक वैज्ञानिक जल निकासी प्रणाली बनाई जो गुरुत्वाकर्षण पर निर्भर थी। होम पेज या नीचे दी गई तस्वीरों पर वीडियो देखें। ये उनकी जल निकासी व्यवस्था के महान उदाहरण प्रदान करते हैं।

हड़प्पा के लोगों की कला[6]

मूर्तियां

टेराकोटा की मूर्तियों का आकार केवल कुछ इंच ऊंचे से लेकर ऊपर की ओर होता है। इनमें से कई मूर्तियाँ पाई गई हैं, और इसमें पहिएदार गाड़ियां, खाट, अतिरंजित स्तनों के साथ शैलीबद्ध महिला आकृतियाँ और पुडेंडा, हार और अन्य आभूषण जैसे सामान शामिल हैं। यह संभावना है कि लकड़ी के हिस्सों की जरूरत है, उदाहरण के लिए, पहिएदार गाड़ियों को काम करने के लिए युगों तक जीवित नहीं रहे। इन मूर्तियों में सबसे प्रसिद्ध देवी माता या देवी में से एक है। सिंधु घाटी सभ्यता की कला के सबसे दिलचस्प टुकड़ों में से एक नृत्य करने वाली लड़की की कांस्य मूर्ति है, जिसे 1926 में हड़प्पा के एक घर से निकाला गया था। यह मूर्ति एक युवती की है, जो सीधी खड़ी है, जिसका सिर पीछे की ओर झुका हुआ है और उसका घुटना है। एक कोण पर मुड़ा हुआ। मूर्ति की दाहिनी भुजा मुड़ी हुई है और हाथ कूल्हे के पीछे रखा गया है, जबकि बायाँ बाएँ पैर की जांघ पर टिका हुआ है। कई चूड़ियाँ, हार और पेंडेंट आकृति की गर्दन और भुजाओं को सजाते हैं, और बालों को एक ढीले बन में लपेटा जाता है। क्या आकृति वास्तव में एक नृत्य करने वाली लड़की का प्रतिनिधित्व करती है, यह कुछ अनुमान का विषय है, हालांकि निश्चित रूप से मुद्रा में निहित संयमित आंदोलन, आकृति की उत्तेजक प्रकृति और कई अलंकरण इस पेशे को इंगित करते हैं।

निष्कर्ष

सैन्धव संस्कृति की प्रमुख विशेषता उसका नगरीकरण है। इस काल में असंख्य छोटे-छोटे नगरों की स्थापना हुई थी। संपूर्ण सैन्धव क्षेत्र में इस प्रकार के नगरों का अधिक से अधिक बसाया जाना, तत्कालीन सक्रिय व्यापार-तंत्र को आलोकित करता है। प्रायः नगरीय अर्थव्यवस्था में अन्तर्सम्बन्धों का एक ऐसा तन्त्र विकसित हो जाता है, जो क्षेत्रीय अथवा भौगोलिक सीमाओं में बँध कर नहीं रहता है। कच्चे माल तथा व्यापारिक वस्तुओं के पारस्परिक आदान-प्रदान हेतु हड़प्पावासी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अतिरिक्त अपने अगल-बगल तथा दूर-दराज बसे देशों के साथ भी व्यापारिक एवं विनियम-सम्पर्क रखते थे।

यह सुविदित तथ्य है कि शहरी लोग खाद्यान्नों का स्वयं उत्पादन न करके अपने आस-पास अवस्थित ग्रामीण क्षेत्रों पर निर्भर करते हैं। अतः सैन्धव कालीन नगरवासी कृषि-कर्म में लग कर, व्यापार निर्माण कार्य, प्रौद्योगिकी एवं शिल्पांकन विकास धार्मिक तथा प्रशासानिक व्यवस्था आदि में संलग्न थे। इन कर्मों के फलस्वरूप कर, भेंट, उपहार, दान अथवा क्रय-विक्रय जन्य आर्थिक लाभ शहरी अर्थव्यवस्था को गतिशील करने में सहायक सिद्ध हुआ।[5]

हड़प्पा कालीन शहरों में रहने वाले लोग अपने लिए उपभोग्य वस्तुओं की खोज में दूरस्थ देशों तक संपर्क रखते थे। यही कारण है कि इस काल में सैन्धव नगरों का जाल अफगानिस्तान में स्थित शारदा घई से लेकर गुजरात में स्थित भगवतराव तक विस्तीर्ण मिलता है। इन नगरों की अवस्थिति से हड़प्पा वासियों के अन्तक्षेत्रीय व्यापार, आपसी सम्बन्ध, आर्थिक अन्तर्निर्भरता तथा सुव्यवस्थित व्यापारिक गतिविधियों पर प्रकाश पड़ता है। उक्त आर्थिक परस्परावलंबन तथा संपर्क का मूल कारण मौलिक संसाधनों का अलग-अलग क्षेत्रों से उपलब्ध होना माना जा सकता है। इन संसाधनों में कृषि, पशु, खनिज, बहुमूल्य पत्थर

तथा लकड़ी आदि सम्मिलित थे। इन वस्तुओं को व्यापारिक केन्द्रं, तथा मार्गों की स्थापना करके ही उपलब्ध किया जा सकता था।

कतिपय बहुमूल्य पत्थरों की प्राप्ति हेतु वे कई-कई दिन तक चलकर दूरस्थ प्रदेशों तक जाते थे। उदाहरण के लिए वैदूर्यमणि तथा फिरोजा के लिए वे हिन्दुकुश तथा पश्चिमोत्तर सीमांत देशों तक की यात्रा करते थे। संभवतः काश्मीर में सोना तथा मिथिला के स्रोत्रों से भी वे परिचित थे।

वे नील रत्न (Lapis Lazuli) को बदख्शां से, हरितमणि (Jade) को मध्य एशिया से, नीलमणि को महाराष्ट्र से, सुलेमानी पत्थर को पश्चिमी भारत तथा सौराष्ट्र से तथा शंख-कौड़ियों को सौराष्ट्र तथा दक्षिण-पश्चिम भारत के समुद्र तटों से लाते थे तथा उनका उपयोग करते थे।

मनके के लिए गोमेद का आयात गुजरात से किया जाता था। पाकिस्तान के रोड़ी और सक्कर की खानों से फ्लिंट तथा च्ट की आपूर्ति उपकरण बनाने के लिए अन्य क्षेत्रों में की जाती थी।

सैन्धव संस्कृति में धातुओं में सर्वाधिक खपत एवं उपयोग ताँबे का था। इसकी प्राप्ति राजस्थान के नागौर, जोधपुर तथा गणेश्वर आदि ग्रामों से तथा मुख्य रूप से खेतड़ी की खानों से होती थी। अकेले गणेश्वर पुरास्थल से 58 तांबे की कुल्हाड़ियाँ, 50 मछली पकड़ने वाले काँटे तथा 400 से अधिक ताम्र निर्मित वाण-फलक प्रकाश में आये हैं। राजस्थान के

अतिरिक्त तांबे का आयात अफगानिस्तान, बलूचिस्तान तथा उत्तरी-पश्चिमी सीमांत क्षेत्रों से भी किया जाता था।

चाँदी संभवतः ईरान तथा अफगानिस्तान से लाई जाती थी।

सोना जैमी बहुमूल्य धातु संभवतः कर्नाटक प्रदेश में स्थित कोलार खान, काश्मीर, फारस तथा अफगानिस्तान से मंगाया जाता था। विद्वानों का अनुमान है कि सिंधु संस्कृति के व्यापारीगण मेसोपोटामिया को भेजे गये अपने माल के बदले में संभवतः सोना एवं चाँदी आदि धातुओं को ही मूल्य के रूप में लिया करते थे।

अन्य धातुओं में शीशा संभवतः काश्मीर, राजस्थान, पंजाब तथा बलूचिस्तान प्रभृति क्षेत्रों से प्राप्त होता था।[4]

किन्तु वैदूर्यमणि जैसी बहुमूल्य पत्थर उत्तरी-पूर्वी अफगानिस्तान में बदख्शां कीमती पत्थरों (Badakshan) से तथा जेड तथा फिरोजा आदि को मध्य एशिया से ही आयात किया जाता था ।

लाजबते, सफेद स्फटिक, गोमेद आदि रल पश्चिमी भारत तथा सौराष्ट्र प्रदेश में उपलब्ध थे।

इसी प्रकार जम्मू में स्थित मांदा (चेनाब नदी के तट पर) से कीमती लकड़ी तथा समुद्री-सीपियां गुजरात तथा पश्चिमी भारत के समुद्र तटों से उपलब्ध की जाती थी।

हडप्पा संस्कृति के लोग समानान्तर आकार के पत्थर के ब्लेड का प्रयोग करते थे, जिन्हें उच्च कोटि के पत्थरों से निर्मित किया जाता था। ये उत्तमोत्तम पत्थर सिन्धु क्षेत्र से हर जगह उपलब्ध नहीं थे पुरातत्वविदों के अनुसार इस प्रकार के पत्र संभवतः सिन्धु उपत्यका में अवस्थित सुक्कर (Sukkur) नामक पहाड़ी स्थल से प्राप्त किया जाता था। इस परिकल्पना का मुख्य आधार गुजरात प्रदेश में स्थित रायपुर पुरास्थल को प्रारम्भिक स्तर से मिले बहुतेरे प्रस्तर उपकरण है, जिन्हें तैयार करने के लिए वांछित पत्थरों को केवल इसी क्षेत्र से लाया जाता रहा होगा। कालान्तर में, यहाँ के हासोन्मुख हड़प्पा वासियों ने स्थानीय पत्रों से हथियार बनाना प्रारम्भ कर दिया था।

इसी प्रकार हड़प्पा संस्कृति की सभी बस्तियों से मिले धातु (ताँबा एवं काँसा) तथा प्रस्तर-उपकरणों में प्राप्त एकरूपता भी चौकाने वाली है। इनकी बनावट तथा वस्तुगत एकरूपता यह इंगित करती है कि समस्त सैन्धव क्षेत्र में उत्पादन तथा वितरण प्रणाली निश्चयतः किसी न किसी केन्द्रीय संस्था द्वारा नियन्त्रित की जाती रही होगी ऐसी केन्द्रीय संस्थाओं के नियंत्रक या तो तत्कालीन शासकगण रहे होंगे अथवा व्यापारीगण।[3]

खनिज पदार्थों अथवा कच्चे मालों की संप्राप्ति से लेकर उनसे बनने वाली वस्तुओं के वितरण अथवा विनिमय आदि कार्यों की व्यवस्था हड़प्पा संस्कृति में विकसित नगरीय अर्थतन्त्र की देन थी। शहरीकरण के उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ-साथ ही सैन्धव युगीन व्यापार तथा व्यापारिक सम्बन्धों के विकास को भी अनुरेखित किया जा सकता है। उत्खननों में मिले आकर्षक मनकों को तत्कालीन शहरीजन बड़ी रुचि के साथ प्रयोग में लाते थे।

चन्हुदड़ो से वैदूर्यमणि के कतिपय ऐसे मनके मिले हैं, जो आधे तैयार हो चुके थे तथा उनका आधा बनना बाकी रह गया था।

इस प्रकार के साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि सैन्धव निवासी बहुमूल्य पत्थरों को दूरस्थ क्षेत्रों से आयात कर उससे सुन्दर वस्तुएँ निर्मित कर सुदूर क्षेत्रों तथा देशों तक भेजा करते थे। उपलब्ध साक्ष्यों से यह भी ज्ञात होता है कि चन्हूदड़ो तथा लोथल में लाल पत्थर (Camelian) तथा गोमेद के मनके बहुतायत में बनते थे तथा इन्हें विदेशों में भी भेजा जाता था।

हड़प्पा युगीन नगर अधिकतर खानों के सन्निकट अथवा व्यापारिक मार्गों पर अवस्थित थे। कुछ नगर कृषि-उत्पादन वाले क्षेत्रों में तथा कुछ अनुपजाऊ भू-भागों में भी अवस्थित मिले। उदाहरण के लिए, बलूचिस्तान में मकरान, समुद्र-तट पर अवस्थित सत्कालिन नामक नगर मेसोपोटामिया के साथ हड़प्पा वासियों द्वारा स्थापित व्यापारिक सम्म संरेखित करता है। संभवतः यह एक विश्राम स्थल अथवा व्यापारिक चौकी जैसा पर केन्द्र रहा होगा।

शोर्तुघई (Shortughai) से मिले बहुसंख्यक वैदूर्यमणि के अवशेषों आलोक में कुछ विद्वान यह प्रस्तावित करते हैं कि दूरस्थ प्रदेशों में अवस्थित खनिजों प्राति हेतु हड़प्पा संस्कृति के लोग संभवतः अपने लिए उपनिवेश के रूप में छोटे-छोटे नगर को बसाया करते थे। इस प्रकार का उपनिवेशीकरण तत्कालीन सैन्धव लोगों की व्यापार कर्म में गहरी रुचि को प्रमाणित करता है। संभव है कि बाह्य या दूरस्थ देशों में वस्तुओं की प्राप्ति के प्रति उनकी आर्थिक संलग्नता के परिणामस्वरूप इन नगरों को बसाया गया रहा हो। ऐसा लगता है कि इस प्रकार की व्यापारिक व्यवस्था संभवतः किसी केन्द्रीय शासन द्वारा नियन्त्रित की जाती रही होगी।[7]

संदर्भ

[1] "We Are All Harappans Outlook India". मूल से 5 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 अगस्त 2018.

[2] "Why Hindutva is Out of Steppe with new discoveries about the Indus Valley people". मूल से 24 जनवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 सितंबर 2018.

[3] Vikash. "हड़प्पा सभ्यता का इतिहास महत्वपूर्ण तथ्य". https://gkfile.com. मूल से 25 फ़रवरी 2021 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2021-02-25. |website= में बाहरी कड़ी (मदद)

[4] David Whitehouse (May 4, 1999). "'Earliest writing' found". BBC News. मूल से 3 सितंबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 September 2014.

[5] "Evidence for Indus script dated to ca. 3500 BCE". मूल से 3 सितंबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 September 2014.

[6] Edwin Bryant (2001). The Quest for the Origins of Vedic Culture: The Indo-Aryan Migration Debate. Oxford University. पृ° 178.

[7] "क्या हड़प्पा की लिपियाँ पढ़ी जा सकती हैं?". मूल से 24 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 अप्रैल 2020.